मानवता के लिए प्रेम

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग

श्री मुक्तानन्द आश्रम में हुए आनन्दमय जन्मदिवस २०१७ के सत्संगों से

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : १
गरिमा बोरवणकर

वह सन् १९८४ के अक्टूबर का माह था। बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के उपलक्ष्य में गुरुदेव सिद्धपीठ में होने वाले आध्यात्मिक अभ्यासों व पूजा-अनुष्ठानों में भाग लेने के लिए भारत भर से व पूरे विश्व से हज़ारों सिद्धयोगी आश्रम आए थे। गुरुचौक के सत्संग-हॉल में — जो अब 'हृदयदीप' के नाम से जाना जाता है — सात दिवसीय अखण्ड नामसंकीर्तन सप्ताह चल रहा था और यज्ञ मण्डप में यज्ञ भी हो रहा था।

इन पावन कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए हर दिन, बसें भर-भरके, बड़ी तादाद में भक्तजन आश्रम आ रहे थे। आने वाले सभी भक्तों के रहने की व्यवस्था हेतु आश्रम के मुख्य द्वार के सामने से जाती हुई सड़क के पार, एक बड़ी-सी, खुली जगह में कई टैन्ट लगाए गए; इस जगह को 'चित्रकूट' कहा जाता था। चित्रकूट में कई, कई तम्बू लगाए गए; सबसे बड़े तम्बू में लगभग दो सौ लोगों के रहने की जगह थी।

गुरुचौक में चले रहे संकीर्तन सप्ताह की आनन्दमय ध्वनि-तरंगे दिन-रात वातावरण को सराबोर कर रही थीं। एक दिन देर रात को जब अधिकतर लोग सोने जा चुके थे, मैं और कुछ अन्य सेवाकर्ता आवास-निवास ऑफ़िस में, संकीर्तन सुनते-सुनते अपनी सेवा कर रहे थे। अचानक, हमें हल्की-हल्की बारिश की बूँदों की आवाज़ सुनाई दी। हमें तो विश्वास ही नहीं हुआ; आश्चर्य से हम एक-दूसरे की तरफ़ देखने लगे क्योंकि बारिश का मौसम कई सप्ताह पहले ही समाप्त हो चुका था — कम से कम हमें तो ऐसा ही लगा था। हमने सोचा कि शायद यह बस थोड़ी-सी बूँदाबाँदी होगी और जल्द ही रुक जाएगी, अतः हम देखने के लिए बाल्कनी की ओर दौड़े। पर बारिश तो लगातार होने लगी और पल-पल तेज़ होती जा रही थी। हम चिन्तित हो गए क्योंकि टैन्ट में सैकड़ों लोग सो रहे थे। बढ़ती बारिश देखकर हम समझ गए कि अब जितनी जल्दी हो सके, उन सभी लोगों के रहने की व्यवस्था कहीं और करनी होगी क्योंकि टैन्ट वॉटरप्रूफ़ नहीं थे और उनमें पानी घुस सकता था। हमें यह भी अन्दाज़ा

लग गया कि इसके लिए हमें कई सेवाकर्ताओं की मदद की आवश्यकता होगी, और यह सब तुरन्त ही करना होगा!

जब हम इस बारे में चर्चा कर रहे थे, तभी गुरुमाई जी आवास-निवास ऑफ़िस में आईं। उन्होंने कहा, "हमें चित्रकूट में रह रहे सभी लोगों की व्यवस्था कहीं और करनी होगी।" गुरुमाई जी ने एक सेवाकर्ता से कहा कि वे गुरुचौक जाकर जितने भी लोग मिलें उन सबको मदद करने के लिए बुला लाएँ।

तुरन्त ही हम सभी इस कार्य में जुट गए। लोगों को जैसे-जैसे पता चला, और भी लोग मदद करने के लिए आगे आए। गुरुमाई जी स्वयं लोगों को विभिन्न कार्य करने के लिए निर्देशन दे रही थीं — कुछ लोग चित्रकूट गए और लोगों को अपना सामान समेटने में मदद करने लगे, कुछ लोग टैन्ट में से सूखे गद्दे उठाने गए और कुछ अन्य, आश्रम के अलग-अलग स्थानों में जाकर, जहाँ से भी मिले वहाँ से गद्दे इकट्ठा करने चले गए।

गुरुमाई जी ने कहा कि हम इन्टेन्सिव हॉल में, जो कि गुरुचौक के नीचे स्थित है, गद्दे बिछाना शुरू कर दें, और मुक्तेश्वर, सिद्धेश्वर व नित्येश्वर — हर बिल्डिंग के कॉरिडोर में भी गद्दे बिछा दें। सभी लोग हाथ बँटाने लगे; जो कुछ करना आवश्यक था, उसे करने लगे। गुरुमाई जी स्वयं, सेवाकर्ताओं के साथ मिलकर गद्दे उठा रही थीं और उन्हें कॉरिडोर में बिछा रही थीं।

चित्रकूट से लोग नए आवास-स्थान पर आने लगे। जब लोगों को उनका नया स्थान बताया जा रहा था तो गुरुमाई जी स्वयं उनके पास जाकर उन्हें प्रेम से पूछ रही थीं कि क्या वे ठीक हैं या क्या उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है।

मैंने देखा कि उस समय लोगों की आँखें भर आईं, कृतज्ञतापूर्वक अपना सिर झुकाकर वे गुरुमाई जी को प्रणाम कर रहे थे। लोगों ने देखा कि उनकी परमप्रिय श्रीगुरु स्वयं, उनके लिए गद्दे उठा रही हैं, गद्दे बिछा रही हैं, उनसे पूछ रही हैं और मध्यरात्रि के समय यह सुनिश्चित कर रही हैं कि वे सभी ठीक हैं; यह सब देखकर सभी लोगों के हृदय द्रवित हो गए। यह लोगों के दिल को छू गया, सभी लोगों ने प्रत्यक्ष रूप से देखा कि गुरुमाई जी उनसे कितना प्रेम करती हैं, उन्हें सभी लोगों की कितनी परवाह है और वे स्वयं सभी की सुख-सुविधा का ध्यान रख रही हैं। गुरुमाई जी के प्रति उन लोगों की कृतज्ञता और भक्ति उतनी ही स्पष्ट रूप से महसूस हो रही थी जितना कि सभी लोगों के लिए गुरुमाई जी का अपार प्रेम दिख रहा था।

चित्रकूट में से जब आख़िरी व्यक्ति की व्यवस्था भी अन्दर हो गई तब गुरुमाई जी ने उन सभी सेवाकर्ताओं को धन्यवाद दिया जिन्होंने रात भर इस कार्य में मदद की थी। उन्होंने हम सभी को बहुत प्यार भरी मुस्कान से देखा और उसी प्रेम से हमारी ओर हाथ हिलाते हुए वे वहाँ से चली गईं।

सुबह होने को थी, फिर भी हम सब पूरी तरह तरोताज़ा महसूस कर रहे थे, शक्ति से पूरी तरह भरा हुआ महसूस कर रहे थे, मानो हम पूरी रात बहुत गहरी नींद सोए हों। हम सब पुनः ऑफ़िस आ गए और कुछ देर शान्त बैठे; रात की प्रेमलता को अपने अन्दर समाने के लिए। नामसंकीर्तन की ध्वनि-तरंगे ऑफ़िस तक पहुँच रही थीं और जैसे-जैसे अधिकाधिक लोग सप्ताह में पुनः भाग लेने के लिए आने लगे, वह ध्वनि और भी अधिक शक्तिशाली होती जा रही थी। हाँ, बारिश अब तक थम चुकी थी, उसने रात भर हम सभी को अपने प्रेम व आशीर्वादों से पूरित कर दिया था!

मैंने प्रत्यक्ष रूप से देखा कि गुरुमाई जी ने हर एक व्यक्ति को असीम प्रेम दिया, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से हर एक की सुविधा पर ध्यान दिया। इससे मुझे श्रीगुरु के हृदय की विशालता की झलक मिली। ऐसा है श्रीगुरु का स्वरूप — प्रेम का सागर!

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : २

स्वामी ईश्वरानन्द

सन् १९८६ में श्रीगुरुमाई भारत के गुजरात राज्य में टीचिंग-टूर पर गईं। सभी बड़े शहरों में उन्होंने बड़े-बड़े सत्संग किए; और हर सत्संग में भाग लेने के लिए हज़ारों की संख्या में भक्त व शुभचिन्तक आए थे। गुरुदेव सिद्धपीठ लौटते समय एक छोटे-से गाँव के सिद्धयोग ध्यान-केन्द्र की संचालन-समिति के सदस्यों ने गुरुमाई जी को आमन्त्रित किया, अतः गुरुमाई जी वहाँ सत्संग करने के लिए रुकीं।

उस गाँव में कुछ ही सिद्धयोग विद्यार्थी थे। किन्तु, जैसे-जैसे गुरुमाई जी के आगमन की ख़बर फैली, पूरा गाँव उनका स्वागत करने के लिए एकत्रित हो गया।

उन्होंने गाँव के चौक पर पताकाएँ लगाईं, चौक को फूल-मालाओं से सजाया और बीचोबीच श्रीगुरु का आसन रखा जिससे सभी लोग उसके आस-पास बैठ सकें। गाँववाले बहुत-से नारियल भी तोड़ लाए और उन्हें तैयार किया ताकि वे गुरुमाई जी को और उनके साथ यात्रा कर रहे स्टाफ़ को ताज़ा नारियल पानी दे सकें। भारत में विशेष आदरणीय अतिथि का स्वागत करने का यह पारम्परिक तरीक़ा है।

जब गुरुमाई जी वहाँ पहुँचीं और अपना आसन ग्रहण किया तो सभी ग्रामवासी भी उनके आस-पास बैठ गए। अत्यन्त भक्तिभाव के साथ दोनों केन्द्र-संचालक, अपने श्रीगुरु का स्वागत करने हेतु एक गिलास में नारियल पानी लेकर आए। गुरुमाई जी ने मुस्कराकर कहा, "पहले मेरे स्वामियों को नारियल पानी दीजिए।" केन्द्र-संचालकों ने स्वीकृति में अपना सिर हिलाया और गुरुमाई जी ने जैसा कहा था वैसा किया।

उसके बाद वे एक और गिलास में नारियल पानी लेकर गुरुमाई जी के समक्ष आए। गुरुमाई जी ने कहा, "स्टाफ़ के सदस्यों को भी थोड़ा नारियल पानी दीजिए, वे इतनी लम्बी यात्रा करके आए हैं।" उन संचालकों ने स्वीकार कर गुरुमाई जी के स्टाफ़ के हर सदस्य को नारियल पानी दिया।

जब वे दोनों केन्द्र-संचालक तीसरी बार नारियल पानी से भरा गिलास लेकर आए तब गुरुमाई जी ने उनसे कहा, "इन गाँववालों ने इतनी सेवा की है। उन्हें भी प्यास लगी होगी। उन सबको भी नारियल पानी पिलाइए।" इस प्रकार सभी गाँववालों ने एक-एक गिलास मीठे, ताज़े नारियल पानी का आनन्द लिया।

अन्त में, वे केन्द्र-संचालक पुनः आए और उन्होंने कहा, "गुरुमाई जी, सभी ने नारियल पानी ग्रहण कर लिया है। अब हम इसे आपको अर्पण करना चाहते हैं।"

गुरुमाई जी ने मुस्कराते हुए अपना सिर हिलाया। उन्होंने कहा, "आप किसी को भूल गए हैं।" दोनों संचालक सोच में पड़ गए। उन्होंने सब ओर नज़र डालते हुए कहा, "हम किसे भूल गए हैं?" गुरुमाई जी ने कहा, "आप ख़ुद को भूल गए हैं। अब आप भी नारियल पानी पीजिए।" उन दोनों संचालकों ने श्रीगुरु को नमस्कार किया और गुरुमाई जी का प्रसाद समझकर नारियल पानी ग्रहण किया।

जब उन्होंने ग्रहण कर लिया, तब गुरुमाई जी ने कहा, "हाँ। अब, जब सबका हृदय तृप्त हो गया है तो मुझे भी तृप्ति महसूस हो रही है।"

उस दिन मुझे श्रीगुरु के विशाल हृदय की एक झलक मिली!

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।